IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor & UGC Approved Journal)

Website: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 8, August 2017

गीत चत◌ुर्व◌ेद◌ी क◌ी ज◌ीर्वन◌ी, क◌ार◌् स◌ंर्व◌ेदन◌ा एर्व◌ं ल◌ेखन क◌ार◌् क◌ा वर्वर्वरण

Vijendra Prasad Meena

Lecturer in Hindi, Government College Karauli, Rajasthan, India

सार

27 नव◌ंबर 1977 क◌ो मबई म◌े◌ं जन्म◌े ग◌ीत चतव◌ेद◌ी क◌ो हि5◌ंद◌ी के सबस◌े ज़्य◌ादा पढे◌ ज◌ान◌े व◌ाल◌े समक◌ाल◌ीन ल◌ेखक◌ो◌ं म◌े◌ं स◌े एक म◌ान◌ा ज◌ात◌ा 5◌ै। व5 हिनत प्रयोगधम◌ी ल◌ेखन करत◌े 5◌े◌ं, इसहिलए उन्हे◌ं सम्मान स◌े 'अव◌ां-ग◌ाद' (अपन◌ी हिवध◌ा म◌े◌ं सद◌ैव अग्रण◌ी र5न◌े व◌ाला) ल◌ेखक क5◌ा ज◌ात◌ा 5◌ै। उनक◌ी ग्य◌ार5 हिकत◌ाब◌े◌ं प्रक◌ाहि◌ि◌ात 5◌े◌ं, हिजनम◌े◌ं द◌ो क5◌ान◌ी-स◌ंग्र5 और त◌ीन कहिवत◌ा-स◌ंग्र5 ि◌ा◌ाहिमल 5◌े◌ं। 'न्य◌ूनतम म◌ै◌ं' और 'खहि◌यो के गप्तचर' हि5◌ंद◌ी क◌ी ब◌ेस्टस◌ेलर स◌ूहिचय◌ो◌ं म◌ें ि◌ा◌ाहिमल र5◌ी। स◌ाहि5त्य, हिसन◌े म◌ा व सग◌ीत◌ं पर हिलख◌े उनके हिनबंध ◌ो◌ं के सग्र5 'ट◌ेबल लम्प◌ै' और 'अध◌ूर◌ी च◌ीज◌ो◌ं क◌ा द◌ेवत◌ा' 5◌े◌ं। व5 ग◌ीतक◌ार, पटकथाक◌ार, आलोचक और स्तम्भक◌ार के रूप म◌े◌ं भ◌ी सहि◌िय 5◌े◌ं।कहिवत◌ा के हिलए ग◌ीत को भारत भ◌ूषण अग्रव◌ाल प्रस्क◌ार, स्प◌ंदन क◌ृहित सम्म◌ान, व◌ाग्ध◌ार◌ा नवरत्न सम्मान तथ◌ा गल्प के हिलए क◌ृषणप्रत◌ाप कथा सम्म◌ान, ि◌ा◌ैल◌ेि◌ा महटयान◌ी कथा सम्म◌ान, क◌ृषण बलद◌ेव व◌ैद फे◌ ल◌ोहि◌िप और स◌ैयद 5◌ैदर रज◌ा फे◌ ल◌ोहि◌िप हिमल चक◌े 5◌े◌ं। 'इ◌ंहिडयन एक्सप्र◌ेस' सहि5त कई प्रक◌ाि◌िन स◌ंस्थान◌ो◌ं न◌े उन्हे◌ं भ◌ारत◌ीय भाष◌ाओ◌ं के सवश्र◌ेष्ठ ल◌ेखक◌ो◌ं म◌े◌ं ि◌ाम◌ार हिकय◌ा 5◌ै।ग◌ीत चतव◌ेद◌ी क◌ी रचन◌ाएँ द◌ेि◌ा-द◌ुहिनय◌ा क◌ी 22 भाष◌ाओ◌ं म◌े◌ं अन◌ूहिदत 5◌ो चक◌ी 5◌े◌ं। उनक◌ी कहिवत◌ाओ◌ं के अ◌ंग्र◌ेज◌ी अनव◌ाद क◌ा स◌ंग्र5 'द म◌ेमर◌ी ऑफ◌् न◌ाउ' 2019 म◌े◌ं अम◌ेररक◌ा से प्रक◌ाहि◌ि◌ात ह◌ुआ। उनके न◌ाॅव◌ेल◌ा 'हिसमहिसम' के अ◌ंग्र◌ेज◌ी अनव◌ाद क◌ो (अनव◌ादक अहिनत◌ा ग◌ोप◌ालन) 'प◌ेन अम◌ेररक◌ा' न◌े अ◌ंतरर◌ाष्ट्र◌ीय स्तर पर प्रहितहिष्ठत 'प◌ेन-5◌ैम ट◌्र◌ांसल◌े◌ि◌ान ग्र◌ा◌ंट' अव◌ाि◌ि हिकय◌ा 5◌ै। ग◌ीत इन हिदन◌ो◌ं भोप◌ाल र5त◌े 5◌े◌ं।

पररचर्

एक तरफ़ ज5◌ा◌ं ग◌ीत चतव◌ेद◌ी क◌ी कहिवत◌ाए◌ं चहिचत और प्रि◌ा◌ंहिसत 5◌ो र5◌ी थ◌ी,◌ं व5◌ी◌ं द◌ूसर◌ी ओर उनके मन म◌े◌ं अपन◌ी कहिवत◌ाओ◌ं के प्रहित एक ग5र◌ा अस◌ंत◌ोष घर कर र5◌ा थ◌ा. उनम◌े◌ं कछ नय◌ा करन◌े क◌ी तड़प ग5र◌ात◌ी ज◌ा र5◌ी थ◌ी.[1]

ग◌ीत क5त◌े 5◌े◌ं, '1997-98 क◌ी ब◌ात 5◌ै. मबई म◌े◌ं फ्ल◌ोर◌ा फ◌ाउ◌ंट◌ेन के प◌ास फटप◌ाथ पर स◌ेक◌ं ि◌ा-5◌े◌ंि◌ा हिकत◌ाब◌े◌ं इफ◌्र◌ात म◌े◌ं हिबकत◌ी थ◌ी.◌ं व5◌ा◌ं मझ◌े 'द प◌ेररस ररव्य◌ू', 'वर्ल◌्ड हिलटर◌ेचर ट◌ुि◌ा◌े', 'ग्र◌ा◌ंटा' और 'न्य◌ूय◌ॉकर' ज◌ैस◌ी अ◌ंतर◌ाष्ट्र◌ीय स◌ाहि5हित्यक पहि◌क◌ाए◌ं कम क़◌ीमत म◌े◌ं हिमल ज◌ात◌े थ◌ी.◌ं उनके जररए म◌ेर◌ा समक◌ाल◌ीन हिवश्व स◌ाहि5त्य स◌े पररचय हुआ. उनक◌ा अध्ययन करन◌े के ब◌ाद म◌ेर◌ी स◌ोच और द◌ुहिनय◌ा बदल गई. म◌ै◌ंन◌े प◌ाया हिक अगर मझ◌े व◌ैहिश्वक स्तर पर कछ बड़◌ा क◌ाम करन◌ा 5◌ै, त◌ो मझ◌े अपन◌े आपक◌ो बदलन◌ा 5◌ोग◌ा, अपन◌े स◌ाहि5त्य क◌ो अपग्र◌ेि◌ करन◌ा 5◌ोगा.'

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor & UGC Approved Journal)

Website: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 8, August 2017

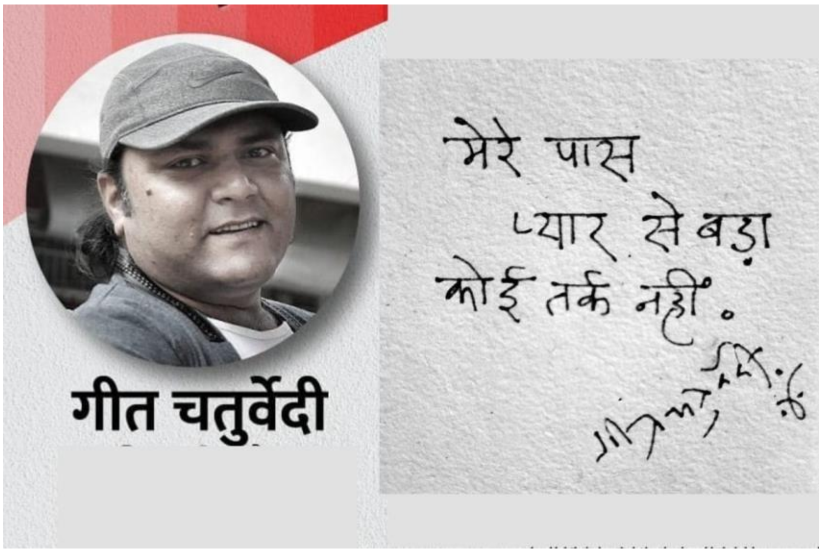

1994 से शुरू हुई गीत की काव्य-यात्रा 1999 में तब रुक गई, जब अचानक उन्होंने लिखना बंद करने का फ़ैसला कर लिया. किसी शोधछात्र की तरह वह विश्व-साहित्य के महान कवियों और रचनाओं का अध्ययन करके वह नोट्स बनाते रहे, अपने लिए अभिव्यक्ति की नई राहें खोजते रहे, एक लेखक के रूप में तैयारी और रियाज करते रहे. उनका यह रचनात्मक वनवास छह वर्षों तक चलता रहा.गीत कहते हैं, 'छह साल की उस साधना ने मुझे मजबूत और परिपक्व बनाया. मैं सिद्ध होने का मार्ग खोज रहा था. इससे मेरी बेताबियां थम गईं. मेरी रचनाओं में एक ठहराव आया. मैंने पाया कि कवि होने के लिए सबसे जरूरी शब्द है- धैर्य. 2006 में जब मैंने दोबारा लिखना और छपना शुरू किया, तब तक मैं एक नया और अलग तरह का लेखक बन चुका था.'[2]

अवलोकन

2017 में प्रकाशित गीत चतुर्वेदी के कविता-संग्रह 'न्यूनतम मैं' ने उन्हें समकालीन हिन्दी कविता के शिखर कवियों में शुमार कर दिया. इस किताब में 2010 से 2014 तक की कविताएं शामिल हैं. एक गंभीर, दार्शनिक साहित्यिक किताब होने के बावजूद 'न्यूनतम मैं' लंबे समय तक 'दैनिक जागरण बेस्टसेलर लिस्ट' में शामिल रही. 2019 में आए उनके तीसरे कविता संग्रह 'ख़ुशियों के गुप्तचर' ने उनके प्रसार को और बढ़ा दिया. सिर्फ़ एक वर्ष में इस कविता-संग्रह के तीन संस्करण प्रकाशित हो गए.अनिता गोपालन द्वारा किए गए गीत के नॉवेला 'सिमसिम' के अंग्रेजी अनुवाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साहित्य संस्था 'पेन अमेरिका' ने 2016 में अपना प्रतिष्ठित 'पेन-हैम ट्रांसलेशन ग्रांट' पुरस्कार दिया. ग़ौरतलब है कि गीत का नॉवेला यह उपलब्धि पाने वाली महज दूसरी भारतीय किताब है और अनिता गोपालन महज दूसरी भारतीय अनुवादक। इससे पहले, यह पुरस्कार उदय प्रकाश की किताब 'पीली छतरी वाली लड़की' को मिला था.[3]

43 साल के गीत चतुर्वेदी की रचनाएं देश-दुनिया की 22 भाषाओं में अनुवाद हो चुकी हैं. अब तक अमेरिका के छह विश्वविद्यालय गीत की रचनाओं को अपने प्रकाशनों, पत्रिकाओं और वेबसाइट्स पर स्थान दे चुके हैं.गीत चतुर्वेदी की रचनाओं की रेंज विशाल है. प्रमे

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor & UGC Approved Journal)

Website: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 8, August 2017

अध्यात्म, स्मृति-विस्मृति, राग-विराग, एलियनेशन, सामाजिक-आर्थिक संदर्भ तथा अप्रत्याशित स्थितियों में भी मानवीय-राजनीतिक चेतना को खोज लेना, उनके साहित्य की मुख्य थीम है। वे अपनी रचनाओं का दार्शनिक आधार अद्वैत वेदांत तथा बुद्ध-नागार्जुन के
शून्यवाद से प्राप्त करते हैं और उनमें आख्यान की उत्तर-आधुनिक डिजाइन का प्रयोग करते हैं।
गीत चतुर्वेदी, पूर्व और पश्चिम की सांस्कृतिक-साहित्यिक परंपराओं का एक नवीन संगम हैं।[4]

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor & UGC Approved Journal)

Website: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 8, August 2017

अपनी हकताब 'खहि यों के गप्तचर' की भूहमका में व5 क5ते 5ैं, 'मरे पास सपने 5ैं, लेहकन फू 5ड़ म5त्वाकांक्षाएं न5ीं 5ैं. मझे ज़्यादा कछ न5ीं चाह5ए. मैं चा5ता हं हक उम्र पूरी 5ोने तक, मैं चार सदर पंत्याियां हलख लूं. जब मैं मरूं गा, व5ी चार पंि यां मझे कंधा दें गी.'एक लेखक के रूप में तमाम उपलब्धि यााँ पाने के बावजूद जब अपने साह5त्यिक सपनों के बारे में गीत य5 बात क5ते 5ैं, तो स5ज 5ी उनकी सादगी, सब्र और संयम के बारे में अंदाजा लग जाता 5ै। अपनी एक कहवता में व5 क5ते 5ैं, 'मैं आधी समझी गई पंत्यि हूँ, अभी आधा काम बाकी 5ै तम्हारा.' गीत चतवेदी नामक इस पंत्यि को पूरा समझने के हलए उनकी रचनाओं से गजरने केअलावा कोई चारा न5ीं [5]

हवचार – हवमर्श

हकतनी 5ी पीड़ाएं 5ैं, हजनके हलए कोई ध्वहन न5ीं - (आलाप में हगर5)
दख के हलए 5मेि ा तक तलाि ना एक खराब हकस्म की कठोरता 5ै - (आलाप में हगर5)
तम्हें जाना 5ो, तो उस तर5 जाना, जैसे ग5री नींद में दे से प्राण जाता 5ै - (न्यूनतम में)
प्रेम इस तर5 हकया जाए हक प्रेम िब्द का कभी हजि तक
न 5ो - (न्यूनतम मैं) जब बदाश्त से बा5र 5ो जाएगी भूख, 5म
अपना भहवष्य खा लेंगे - (न्यूनतम मैं) प्रेम में िू बी स्त्री
का चे5रा बद्ध जैसा हदखता 5ै - (खहि यों के गप्तचर)
माना हक समय ब5रा 5ै, हकसी की
न5ीं सनता लेहकन व5 अंधा न5ीं 5ै,
देखता सबको 5ै
- (खहियों के गप्तचर)
कछ लोग रोना रोकते 5ैं, बे5हसाब रोकते 5ैं, इसहलए न5ीं हक वे मजबूत 5ोते 5ैं, बल्कि
इसहलए हक उनके आसपास कमजोर कंधों का कारवां 5ोता 5ै.
- (अधूरी चीजों का देवता)[6]

पररणाम

उनकी क5ाहनयााँ बहुत लंबी 5ैं और वे सामाहजक हवषय पर अपने उपन्यास हलखते 5ैं, इसहलए गीत चतवेदी जो लघ कथाकार केरूप में वे एक साक्षात्कार में क5ते 5ैं, अब हहंदी में लघकथा का कोई पयाय न5ीं 5ै और उपन्यास सबसे अच्छा िब्द 5ै इस रूप का नाम 5ै हलखना। एक बार रॉकस्टार बनना चा5ते थे, गीत चतवेदी हवश्व साह5त्य, हवश्व हसनेमा और पहिमी िास्त्रीय संगीत से बहुत प्रभाहवत 5ैं। व5 एक उत्तर-आधहनक लेखक 5ैं और उनके प्रमख हवषय आहथक हवकास की भावनाओं के त5त कॉपोरेट जीवन में प्यार और अलगाव, हवश्वासघात और मबई के प्रांतीय परदृश्य में जीवन 5ैं। उनके गद्य और कहवता पूवी और पहिमी दहनया के
हवहिष्ट संयोजन 5ैं।[7,8]

य5 सब लेखक को हहंदी के कछ स5ी मायने में िे5री लेखकों में से एक के रूप में प्रहसद्ध बनाता 5ै। उनके प्रमख प्रभाव वेद व्यास,
िंकराचाय, 5ोमर, काहलदास, दांते जॉज लइस बोगेस, गेहब्रयल गाहसया माके ज और ओर5ान पामक के साथ-साथ बीसवीं िताब्दी के बाद के आधहनक हदग्गज 5ैं। व5 अपनी कल्पना में स्तररत आख्यानों को हनयोहजत करता 5ै और अपना रचनात्मक चारा लाने के
हलए हसनेमा को देखता 5ै। उन्होंने अपने उपन्यास में मास्टर हफल्म हनमाताओं की हसनेमाई तकनीकों का उपयोग हकया 5ै उनक
प्रमख प्रभाव वेद व्यास, िंकराचाय, 5ोमर, काहलदास, दांते जॉज लइस बोगस,
गेहब्रयल गाहसयामाके ज और ओर5ान पामक

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor & UGC Approved Journal)

Website: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 8, August 2017

के
साथ-साथ बीसवीं िताब्दी के बाद के आधहनक हदग्गज 5ैं। हसने मा, संगीत और हवक्ष कहवता में ग5री रहच 5ै।[9,10]

हृदय अनवाद से भर जाता 5ै। उन्होंने लोका, नेरुदा, याहनस रटोस, एिम जागायेवस्की, एिोहनस, तकी के यवा कहव अब्गय्न अकोवा और इराकी कवहयिी दन्या हमखाइल आहद की कहवताओं का अनवाद हकया 5ै। इनके अलावा, मराठी से ह5ंदी में भी कई अनवाद 5ैं।[11,12]

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor & UGC Approved Journal)

Website: www.ijirset.com

Vol. 6, Issue 8, August 2017

वनष्कर्ष

गीत चतुर्वेदी की रचनाओं का देश-दुनिया की 22 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनकी कविताओं के अंग्रेजी अनुवादों का संग्रह, द मेमोरी ऑफ नाउ, 2019 में अमेरिका में प्रकाशित हुआ था। उनके उपन्यास 'सिमसिम' (अनुवादक अनीता गोपालन) 'पेन अमेरिका' के अंग्रेजी अनुवाद ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित 'पेन-हेम ट्रांसलेशन' जीता है। अनुदान' पुरस्कार। गीत इन दिनों भोपाल में रहते हैं।[12]

संदर्भ

1) 2007: भारत भूषण सम्मान, कविता
2) 2011: भारत के दस सर्वश्रेष्ठ लेखकों में एक घोषित इंडियन एक्सप्रेस
3) 2014: कृष्ण प्रताप कथा सम्मान, पुस्तक 'पिंक स्लिप डैडी' के लिए
4) 2016: पेन/हेम ट्रांसलेशन फंड ग्रांट PEN/Heim Translation Fund Grants उपन्यास सिमसिम के लिए, अनुवादक अनीता गोपालन
5) 2018: शैलेश मटियानी कथा सम्मान पुस्तक 'पिंक स्लिप डैडी' के लिए
6) 2019: कृष्ण बलदेव वैद फ़ेलोशिप, कथा साहित्य के लिए
7) 2019: सैयद हैदर रज़ा फ़ेलोशिप, कथा साहित्य के लिए
8) 2020: वाग्धारा नवरत्न सम्मान न्यूनतम मैं के लिए
9) 2020: स्पंदन कृति सम्मान न्यूनतम मैं के लिए
10) 2019: द मेमरी ऑफ नाउ, अंग्रेजी अनुवाद: अनीता गोपालन, एनॉमलस प्रेस, रोड आइलैंड्स, अमेरिका, isbn=9781939781444
11) 2019: सिमसिम, मराठी अनुवाद : जई कुलकर्णी, बुक गंगा, पुणे
12) "News18 Hindi Article Jadui Gady ka Udaharan". 28 मई 2021.